

अध्याय-4

शारीरिक शिक्षा का सामाजिक आधार (Sociological foundations of Physical Education)

व्यक्ति के विकास पर समाज का विशेष प्रभाव पड़ता है। सामाजिक रीति तथा संस्कृति व्यक्ति तथा उसके व्यवहार का निर्माण करती है। व्यक्ति का व्यवहार उसके तथा प्रकृति और वातावरण के सम्बन्ध अथवा प्रतिक्रिया से बनता है और इस प्रकार व्यक्तित्व का निर्माण होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अकेला जीवन नहीं जी सकता। शिशु दूसरों पर निर्भर करता है तथा विभिन्न संस्थाओं से समाजीकरण सीखता है और समाज के अन्य सदस्यों से विमुक्त हो वयस्क होकर स्वतन्त्र जीवन जीने लगता है। समाजीकरण वह प्रक्रिया है जो सामाजिक, मानसिक व भौतिक हुनर प्राप्त करवाती है जो समाज में जीवित रहने के लिये आवश्यक है। आधुनिक समय में समाजीकरण ज्यादा कठिन है क्योंकि सीखने के लिए बहुत कुछ है तथा ज्यादा तालमेल बैठाने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम केवल व्यायाम करने के लिये ही नहीं, अपितु ऐसे सामाजिक अनुभव दिये जाने चाहिये जिनसे सुन्दर व्यक्तित्व का निर्माण हो सके। उदाहरणार्थ यदि एक बालक गेंद को उछाल कर पकड़ता है तो उससे शारीरिक प्रतिक्रिया होती है परन्तु जब वह दूसरे बालकों के साथ उसी गेंद को खेलता है तो उसमें उपरोक्त शारीरिक प्रतिक्रियाएँ भी होंगी ही साथ ही कई महत्वपूर्ण सामाजिक प्रतिक्रियाएँ भी होंगी और इस प्रकार उसके अनुभव में वृद्धि होगी तथा उसका व्यक्तित्व सामाजिक दृष्टिकोण से अच्छा होगा।

शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद समाज की जरूरत (Physical Education and sport as a need of the Society)

जन्म के समय बच्चे पशुओं की तरह होते हैं, हरएक की विशिष्ट पैतृक धरोहर व स्वभाव होता है। कोई बच्चा भी पूर्व निर्मित सोशल सेल्फ (Social self) लेकर पैदा नहीं होता। परिवार, स्कूल, कॉलेज, मित्र, राज्य, देश इत्यादि ही उसे सामाजिक बनाते हैं और इस सामाजीकरण की प्रक्रिया में खेल और शारीरिक शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। वयस्क हो जाने पर जब व्यक्ति अपनी स्वतन्त्र जिन्दगी जीने लगता है तो उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है व संघर्ष करना पड़ता है। इन कठिनाइयों और

प्रतिस्पर्धा में खरा उतरने के लिये खेल व स्पोर्ट्स उसे तैयार करते हैं। इसमें भौतिक, मानसिक तंदरुस्ती, अच्छा चरित्र, अनुशासन, प्रतिस्पर्धा की भावना, सामाजिक प्रतिष्ठा शामिल हैं। लड़का व लड़की में बुनियादी चारित्रिक विकास खेलों से ही होता है।

लड़के व लड़कियाँ जब खेलों में हिस्सा लें तो इन गुणों का विकास होना चाहिये-

1. खेल और शारीरिक गतिविधियों से अच्छे चरित्र का निर्माण होता है।
2. खेल में हिस्सा लेने से अनुशासन की सीख मिलती है।
3. खेल सामाजिक नियंत्रण एवं स्वयं पर नियंत्रण सिखाते हैं।
4. खेलों के जरिये व्यक्तिगत उन्नति के अवसर मिलते हैं।
5. शारीरिक तंदरुस्ती मिलती है।
6. इससे मानसिक फुर्ती बढ़ती है।
7. खेलों में भाग लेने से शिक्षा में उपलब्धि प्राप्त होती है।
8. खेल राष्ट्रीय भावना को बढ़ाते हैं।

सामाजिक विकास में शारीरिक शिक्षा का योगदान (Sociological implications of Physical Education and sports)

आधुनिक शैक्षणिक विचारधारा में यह स्पष्ट हो चुका है कि शिक्षा का उद्देश्य एक पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है जिससे उस व्यक्ति का मानसिक, आध्यात्मिक विकास तथा शारीरिक विकास हो सके। यह भी सिद्ध हो चुका है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन होता है। इसी प्रकार स्वस्थ व्यक्ति ही अच्छा नागरिक बनता है। इसलिये शारीरिक शिक्षा को सिर्फ व्यायाम ही न समझते हुए पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण अंग समझना चाहिये।

अनादिकाल से मनुष्य दो प्रकार के कार्य करता आया है। एक तो ऐसे कार्य हैं जो उसके लिये स्वाभाविक हैं और दूसरे ऐसे हैं जो वह वातावरण के प्रभाव के कारण करता है। इस प्रकार मनुष्य का प्रत्येक कार्य एक प्रतिक्रिया है और वह कुछ-न-कुछ उसके फलस्वरूप व्यक्त करता है। शारीरिक शिक्षा के अधिकतर कार्य प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक है, परन्तु कुछ कार्य जैसे लोकनृत्य, ऐसे खेल जो प्राचीन सभ्यता की देन हैं और राष्ट्र की संस्कृति व सभ्यता के प्रतीक हैं उन्हें उचित स्थान मिलना चाहिये।

गत कुछ वर्षों में संसार में ऐसी वैज्ञानिक प्रगतियाँ हुई हैं जिनके परिणामस्वरूप व्यक्ति के निजी तथा सामाजिक जीवन में अनेक परिवर्तन आए हैं। अतः अब प्रत्येक समाज अपने कार्यक्रमों को समझबूझ तथा वैज्ञानिक आधार पर बनाना चाहता है। इस दृष्टि से शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम उपयोगिता के आधार पर बनाये जाने चाहिये जिनसे शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक व नैतिक सुधार भी हो सके। समाज-विरोधी व्यवहारों का उन्मूलन किया जा सके। खाली समय का सदुपयोग हो सके और युवाओं

को प्रेरित कर सकें। वास्तव में शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम आधुनिक भारत की आवश्यकताओं के आधार पर और भारतीय आदर्शों का प्रतीक हो और इसके द्वारा प्रगतिशील प्रजातंत्रात्मक भारत के लिए उत्कृष्ट नागरिकों का निर्माण हो सके।

सामाजिक विकास में शारीरिक शिक्षा का योगदान सामाजिक संस्थाएँ (Social Institutions)

बाल्यावस्था में बालक पूर्ण रूप से माता-पिता व अपने अभिभावकों पर आश्रित होता है। आरम्भ में बालक असभ्य, अनैतिक एवं असंस्कृत होता है। उसे व्यवहार प्रणाली, सामाजिक प्रथाओं, परम्पराओं, धारणाओं रीति-रिवाजों आदि का ज्ञान नहीं होता। बालक के जीवन के सभी पक्ष समाज में रहकर विकसित होने लगते हैं। धीरे-धीरे उसे अपने परिवेश का ज्ञान होता है और वह सामाजिक नीतियों-रीतियों को अपनाने लगता है। व्यक्ति के समाज में स्थापित होने की प्रथम इकाई परिवार है और उसके सामाजिक विकास का क्रम परिवार से ही शुरू होता है। जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है वैसे-वैसे उसका सामाजिक दायरा बढ़ने लगता है। बालक का सामाजिक दायरा बढ़ाने में विभिन्न संस्थाओं की विशेष भूमिका होती है। जैसे- परिवार, स्कूल आदि। समाज में व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक, भौतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पहलुओं का विकास होता है, जो व्यक्ति को विभिन्न सामाजिक संस्थाओं द्वारा प्राप्त होते हैं।

व्यक्ति के विकास में सहयोगी सामाजिक संस्थाएँ निम्न हैं-

परिवार- समाज की प्रथम इकाई परिवार है। बालक के सामाजिक विकास की शुरुआत परिवार से ही होती है। यह एक छोटा सा सामाजिक समूह होता है जिसमें बालक के माता-पिता, भाई बहन आदि होते हैं। बालक को सामाजिक बनाने में माता-पिता की अहम भूमिका होती है। माता-पिता से वह बोलचाल, भाषा, नैतिक मूल्य, बड़ों का आदर करना, दूसरों का साथ देना, सहनशक्ति, आत्मबलिदान, प्यार एवं सामाजिक अच्छाइयों का पालन करना आदि बातों को सीखता है। परिवार के वातावरण का बालक के विकास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। अगर किसी परिवार के लोगों का आचरण, व्यवहार एवं आदतें अच्छी नहीं हैं तो बालक भी उसे अपनायेगा। अगर अच्छा परिवार होगा तो बालक भी अच्छी आदतें सीखता है।

बालक के समाजीकरण की नींव परिवार ही रखता है। बालक के मन-मस्तिष्क पर परिवार का सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। बालक हमेशा अपने परिवार से जुड़ा होने के कारण उससे बहुत कुछ सीखता है। परिवार के प्रभाव से ही बालक के व्यक्तित्व का निर्माण होता है और यही उसके व्यवहार, रुझान, आचरण, आदतों एवं अनुभवों को प्रभावित करता है। इसलिए परिवार सर्वोच्च सामाजिक संस्था मानी जाती है।

विद्यालय- व्यक्ति के समाजीकरण की प्रमुख इकाई शैक्षणिक संस्थाएँ होती हैं। शिक्षा व्यक्ति को समाज में प्रभावी जीवन व्यतीत करने की कला प्रदान करती है

जो उसे विद्यालय से प्राप्त होती है। शिक्षा बालक की आदतों एवं रुझानों में बदलाव लाती है। शैक्षणिक संस्थाओं में ही बालक के अंदर मानसिक गुणों का समावेश होता है। इन संस्थाओं में अलग-अलग समुदायों के बालक एक-दूसरे के नज़दीक आते हैं जिनकी व्यवहारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि भी अलग-अलग होती है जिससे बालक विभिन्न सामाजिक समुदायों की जानकारी प्राप्त होने के साथ-साथ वह एक-दूसरे का सहयोग करना एवं आपसी तालमेल बिठाना भी सीख जाता है, इससे बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है।

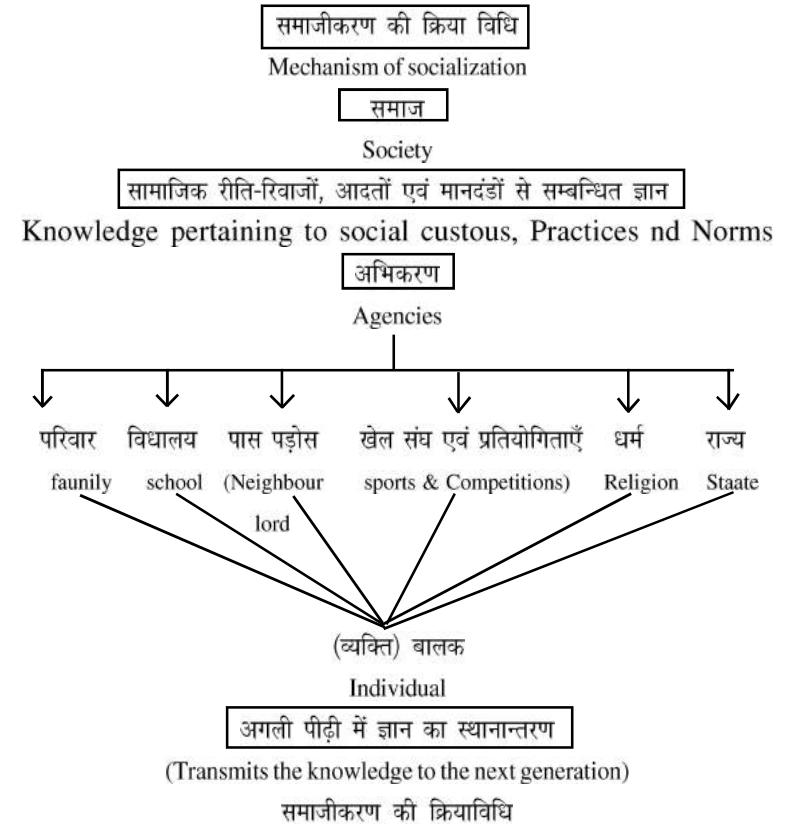
पास-पड़ोस- बालक को सामाजिक बनाने में पास-पड़ोस एवं मित्रगणों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बालक पारिवारिक परिवेश से बाहर निकलकर हमउम्र दोस्तों के समूह में जाता है जहाँ वह विभिन्न परिवारों से विभिन्न व्यवहार, तौर तरीके, रहन-सहन आदि सीखता है। सहयोगियों से उसके सम्बन्ध प्रगाढ़ होते हैं। परिवार से प्राप्त गुणों के अतिरिक्त, व्यक्ति को सीखने के लिए पास-पड़ोस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यहाँ व्यक्ति में समाज की रीतियों-कुरीतियों को समझने की योग्यता का विकास होता है। दोस्तों के व्यवहार से प्रभावित होकर उनका अनुसरण करना एक सामान्य प्रक्रिया होती है। अतः अच्छे पड़ोस व मित्रों का बालक के समाजीकरण में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

खेल संघ एवं प्रतियोगिताएँ- वर्तमान युग में खेल संघों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव है। व्यक्ति का समाजीकरण खेल प्रतियोगिताओं के द्वारा होता है। खेल प्रतियोगिता के द्वारा बच्चों में आत्मनिर्भरता व आत्मविश्वास का विकास होता है। खेल संघ बच्चों में नेतृत्व भावना, सूझबूझ, आपसी सामंजस्यता व भाईचारे की भावना को विकसित करने में सहायक होते हैं। प्रतियोगिता के द्वारा शिक्षक, प्रशिक्षक व अग्रज साथियों के प्रति सत्कार की भावना का विकास होता है एवं नियम-कानून को मानने की प्रवृत्ति का विकास होता है जो व्यक्ति को आदर्श नागरिक के रूप में विकसित करने में सहायक है। राष्ट्रीय एकता की भावना एवं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव भी खेल प्रतियोगिताओं के द्वारा विकसित होते हैं जिसका सम्पूर्ण दायित्व खेल संघों द्वारा निभाया जाता है।

धर्म- हमारे घर-परिवारों में किसी न किसी माध्यम से धार्मिक रीति-रिवाजों को अपनाया व मनाया जाता है। ये धार्मिक रीति-रिवाज बालक मन मस्तिष्क एवं विचारों को प्रभावित करते हैं जिससे उसे सामाजिक अच्छाइयों व बुराइयों वाले तत्वों का ज्ञान होता है जैसे- झूठ न बोलना, किसी को धोखा न देना, बड़ों की आज्ञा-पालन, ईमानदार गुणवान बनना आदि धर्म के अनुसरण से बालक का व्यक्तित्व विकास होता है। धर्म व्यक्ति या बालक के विचारों एवं जीवनधारा को बनाने का कार्य करता है।

राज्य- राज्य में सत्ता प्रधानता होने के कारण यहाँ नियम-कानून बनाये जाते हैं। इन्हीं नियम कानूनों का पालन राज्य में रहने वाले व्यक्ति को करना पड़ता है। यदि

व्यक्ति कानून के अनुसार व्यवहार और आचरण नहीं करेंगे तो उन्हें आर्थिक या शारीरिक दण्ड मिलता है। इस प्रकार राज्य की कानून व्यवस्था लोगों के व्यवहार एवं आचरण में बदलाव लाती है। इससे लोगों में शान्ति व सद्भावना का विकास होता है।



खेलकूद मानव की सांस्कृतिक विरासत (Physical activities and sports as men's Cultural heritage)

खेलकूद मानव जिन्दगी का एक अहम हिस्सा शुरू से रहा है। उसकी उत्पत्ति के समय से। तब यह उसकी जरूरत थी उसे अपने आपको बचाने व भोजन जुटाने में ये खेल व शारीरिक क्रियाएँ अपरिहार्य थी। बाद में समय के साथ ये उसके मनोरंजन और प्रमोद का साधन हुई और उसकी संस्कृति का हिस्सा बन गई। खेल लोगों को मिलाते हैं और राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एकता पर गहरा असर डालते हैं। हमारी संस्कृति हमारे इतिहास में छिपी है उसकी जड़ तक जाने के लिए हमें उसे जानना अति आवश्यक है।

1. यूनान (Greece)- यूनान में खेल सबसे अधिक विकसित थे और उसे खेलों का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। यूनानी खेलप्रिय थे और दूसरे देशों से युद्ध करने के लिये उन्हें तंदुरुस्ती की जरूरत थी इसी कारण खेल उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गये। स्पार्टा व एथेन्स का नाम खेलों से जुड़ा है। स्पार्टा में खेलों का मुख्य उद्देश्य ताकतवर इन्सान पैदा करना था जो देश की रक्षा कर सकें। एथेन्स में नागरिकों को ज्यादा लोकतान्त्रिक अधिकार प्राप्त थे। उसकी सेना भी खेलों में बढ़-चढ़कर भाग लेती थी परन्तु वे खेल के नैतिक, मानसिक, भौतिक व सौन्दर्य विकास पर अधिक ध्यान देते थे। वे त्योहारों के शौकीन थे व ओलम्पिक भी एक प्रकार का त्योहार था जो जीयस सर्वोच्च देवता को 776 बी.सी. में खुश करने के लिए शुरू किया गया था। चार साल बाद होने वाले ये खेल 394 AD में रोमन साम्राज्य थियोजेसिस ने बन्द कर दिये। यूनान को विशेष आभार देते हुए पहले आधुनिक ओलम्पिक खेल 1896 ग्रीस में ही शुरू किये गये।

2. रोम (Rome)- रोमन खेलों को संस्कृति का अभिन्न अंग नहीं मानते थे। उनके लिये खेल, सैनिक उद्देश्यों के लिये ठीक नहीं थे। वे खेलों को मनुष्य के गतिशील विकास के लिये आवश्यक नहीं मानते थे। रोमन साम्राज्य में खेलों में अत्यधिक हिंसा व्याप्त हो गई। इनमें रथ की दौड़, ग्लेडियर इत्यादि। यह खेलों का अन्धा युग के नाम से जाना जाता है।

3. काला युग (The Dark ages)- रोमन साम्राज्य में नैतिक व भौतिक मूल्यों की कमी के कारण पतन होना स्वाभाविक था। उन पर बर्बर जातियों ने हमले बोले तथा रोमन राज्य नष्ट हो गया। बर्बर जाति के लोग बलिष्ठ थे और शारीरिक व नैतिक दृष्टि से मजबूत थे। इनसे आगे आने वाली पीढ़ियाँ मजबूत पैदा हुईं।

4. मध्य युग (The Middle ages)- ईसाई धर्म के उदय के कारण शारीरिक गतिविधियों में गिरावट आई। आध्यात्मिक पहलू पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा। शरीर से अधिक जोर आत्मा पर दिया जाने लगा और शरीर को आत्मा के अधीन रहना चाहिये इस धारणा को बल मिला। सकोलैस्टिकसम (Scholasticism) का उदय हुआ और मन व बुद्धि पर अधिक जोर दिया जाने लगा। सामन्तवाद के दौरान मध्ययुग में केवल ऊपरी वर्ग को छूट थी कि पादरी बने या सेनापति। ज्यादा जोर युद्ध में काम आने वाली कला कौशल पर दिया जाता था न कि ग्रीक द्वारा अपनाई गई आदर्श शारीरिक शिक्षा पर।

पुनर्जागरण (The Renaissance)- 14वीं व 17वीं शताब्दी के मध्य पुनर्जागरण का समय आया जिसका अर्थ है पुनः जन्म लेना। इसमें पुरातन रोमन व ग्रीक शिक्षाओं को पुनर्जीवित किया गया। इसमें शरीर व आत्मा को अलग न समझकर एक ईकाई माना गया। खेलकूद व शिक्षा विज्ञान को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाने लगा।

पुनर्जागरण अवधि में खेलकूद का पुनः जन्म हुआ और इसकी गतिविधि ग्रीक से भी बहुत आगे उत्कर्ष पर पहुँच गई। इसमें आधुनिक देशों का बड़ा योगदान है।

जर्मनी (Germany)- यूरोप के केन्द्र में स्थित होने के कारण जर्मनी ने खेलकूद पर बहुत प्रभाव डाला है। जिमनास्टिक बहुत ऊँचे स्थान पर था। Guts Muths जिन्हें जिमनास्टिक का ग्रैंडफादर कहा जाता है इसे वैज्ञानिक पद्धति में प्रयोग किया तथा इसमें खेलों व तैराकी को शामिल किया। उसका प्रोग्राम इतना कामयाब हुआ कि लोग अपने बच्चों को इनमें भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने लगे। इस काम को Friedrich John तथा Adolph Speiss ने आगे बढ़ाया और जोर दिया कि गणित भाषा की तरह खेल विज्ञान को उतनी लोकप्रियता दी जाय।

स्वीडन (Sweden)- Per Henrik Ling का नाम शारीरिक विज्ञान के इतिहास में सबसे ऊपर आता है। उसने जिमनास्टिक का एक ऐसा ढंग अपनाया जिसे Swedish Gymnastics कहते हैं जिसे बाद में अमेरिका ने भी अपनाया। Ling ने वैज्ञानिक सोच के आधार पर Anatomy व Physiology को खेलकूद गतिविधियों में लगाया। इसी तरह आधुनिक देशों में जिनका शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने में बहुत योगदान है वे हैं डेनमार्क, इंग्लैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान व चीन।

भारत (India) भारत में खेल की लम्बी व महत्वपूर्ण धरोहर है। सिंधु घाटी सभ्यता (3250 B.C. - 2500 B.C.) में योग अभ्यास, तैराकी मुक्केबाजी तथा (dice) खेलें बहुत लोकप्रिय थीं। वैदिक काल (2500 से 600 B.C.) में योग अभ्यास, व्यायाम को धार्मिक कर्तव्य समझकर किया जाता था। मिलिट्रीड्रिल, कुश्ती, तीर कमान चलाना, डिसकस फेंकना, भाला व घुड़सवारी प्रचलन में थे। मध्ययुग (1000 A.D. - 1757 A.D.) में गुरुकुल का उदय हुआ जहाँ खेलों को बहुत उच्च स्थान प्राप्त था। मुगलकाल के दौरान भी कुश्ती, मुक्केबाजी, कबूतर उड़ाना, चैस बहुत लोकप्रिय खेल थे।

आज़ादी के बाद खेलों के प्रोत्साहन के लिये कई योजनाएँ व नीतियाँ चलाई गईं तथा कई Sports Associations व संघ बनाए गये। ओलम्पिक खेलों की तर्ज पर एशिया देशों के बीच प्रतिस्पर्धा करवाने के लिये भारत ने एशियन गेम्स शुरू करवाने का श्रेय प्राप्त किया जो हर चार साल बाद आयोजित होते हैं। नई दिल्ली में 1951 में पहले एशियन गेम्स शुरू हुये। खेल राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देते हैं तथा उसके फायदे निम्न हैं-

1. सही मूल्य स्थापित करना- राष्ट्रीय एकता के सही मूल्य जैसे साथ देना, दोस्ती, न्यायप्रियता, सच्चाई, दूसरों को योगदान आदि सिखाती है।

2. गहन अनुभव प्राप्त करना- विभिन्न देशों के लोग आपस में मिल कर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं दोस्ती एवं सामाजिक दायरे विस्तृत होते हैं।

3. भय और अविश्वास दूर करना- विश्व खेल दुनिया को एक बड़े घर की तरह बनाते हैं। दुश्मनी, डर, अविश्वास को दूर कर आराम और दोस्ती का वातावरण

बनाते हैं।

4. समुदायों को करीब लाना- लोगों में आपसी समझ बढ़ने से विभिन्न समुदायों के लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं।

5. मानसिक समझ बढ़ाना- खेल नौजवान खिलाड़ियों के अनुभव और ज्ञान में वृद्धि कर हुनर पैदा करते हैं जिससे राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है।

6. अनुशासन को बढ़ावा देना- खेल का अर्थ है अनुशासित प्रयत्न। उनकी आदत बन जाने से नियम व कायदे कानून में रह कर जीना सीखते हैं चाहे कितनी विषम परिस्थिति क्यों न हो।

7. कानून मानने की आदत डालना- खेलों में नियम के अंदर खेलने से ये उनकी आदत में शुमार हो जाता है जिससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

8. सांस्कृतिक दरारें भरना- खेल दूसरे धर्म के प्रति आदर व सम्मान सिखाते हैं। पूर्वाग्रहों, भेदभावों को मिटाकर आपसी समझ पैदा करते हैं जिससे सांस्कृतिक व धार्मिक सद्भावना पैदा होती है।

9. सामाजिक सम्भावनाओं का विकास- खेल एक नया सामाजिक ढांचा पैदा करते हैं जिसमें खेल के जरिये विभिन्न जाति नस्ल के लोग एक नई विचारधारा के साथ विकसित होते हैं।

10. बेहतर धरोहर का संरक्षण- खेल देश का राजनैतिक व सामाजिक, सांस्कृतिक इतिहास का संरक्षण करते हैं। वे राष्ट्रीय व मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं।